

जन्म शताब्दी पुस्तकमाला- 6

युग परिवर्तन में ज्ञानयज्ञ की भूमिका (प्रवचन)

- श्रीराम शर्मा आचार्य

युग परिवर्तन में ज्ञानयज्ञ की भूमिका

गायत्री मंत्र हमारे साथ-साथ बोलिए—

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य

धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।

देवियो, भाइयो ! मनुष्य के शरीर में दो चीजें हैं—एक उसकी रचना अर्थात् उसकी काया और दूसरी चेतना । काया का खाने-पीने से संबंध है, सोने-उठने से संबंध है और गिने-चुने लोगों से संबंध है । बस, पशु का छोटा-सा जीवन जिस तरीके से काया के ऊपर टिका रहता है, उसी तरीके से मनुष्य का जीवन टिका रहे, तो यही मानना चाहिए कि मनुष्य के जीवन का कोई महत्त्व न बन सका और मनुष्य के जीवन का कोई उद्देश्य पूरा न हो सका । खाया और बच्चे पैदा किए और बच्चे पालने की जिम्मेदारियों में फँसे रहे । यह भी कोई जीवन है क्या ? ये तो कोई जीवन नहीं है । ये तो बहुत घटिया और पशुओं जैसा नारकीय जीवन है ।

मानवीय चेतना-विचारणा ही है विशेषता

मनुष्य के पास जो कुछ भी विशेषता और महत्ता है, इससे वह स्वयं उन्नति कर जाता है और अपने समाज को ऊँचा उठा ले जाता है। उसकी अंतरंग की दिशाधारा को जिसको हम चेतना कहते हैं, अंतरात्मा कहते हैं, विचारणा कहते हैं। वही एक चीज है जो मनुष्य को ऊँचा उठा सकती है, महान बना सकती है, शांति दे सकती है और समाज के लिए उपयोगी बना सकती है। चेतना मनुष्य की, जिसको विचारणा हम कहते हैं। विचार करने का क्रम आदमी का किसका कैसा है? बस असल में वही उसका स्वरूप है। छोटा आदमी लंबाई-चौड़ाई के हिसाब से नहीं होता है। कोई भी, जिस आदमी की मानसिक स्तर की ऊँचाई कम है, जो आदमी ऊँचे सिद्धांतों, ऊँचे आदर्शों को नहीं सोच सकता, जो आदमी सिर्फ पेट तक और अपनी संतान पैदा करने तक सीमाबद्ध हो जाता है, वो छोटा आदमी, एक इंच का आदमी कहें तो कोई अचंभे की बात नहीं,

उसको मेंढ़क-कीड़े की तुलना करें, तो कोई अचंभे की बात नहीं। कीड़े-मकोड़ों में से कोई गिनती करें, तो कोई हर्ज की बात नहीं। मनुष्य का स्तर और मनुष्य का गौरव उसके ऊँचे विचारों पर टिका हुआ है और ऊँचे विचार जब कभी भी मनुष्य के होते हैं तो उसका जीवन देवत्व जैसा दिखाई पड़ता है। गरीब हो तो क्या? अमीर हो तो क्या? गरीबी से क्या बनता-बिगड़ता है? अमीरी में जौ की रोटी खा सकता है, गरीबी में मक्का की रोटी खा सकता है। क्या शर्म की बात है? अमीर आदमी रेशमी कपड़े पहन सकता है और गरीब आदमी मोटे कपड़े पहन सकता है और कौन खास बात है? आदमी के स्तर पर कुछ फर्क नहीं जाता है। एक कानी कौड़ी के बराबर भी। मनुष्य का स्तर जब आदमी का बढ़ता है, तो उसके विचार करने के क्रम और उसके सोचने के तरीके पर टिका रहता है। मनुष्य की महानता भी उसी पर टिकी हुई है। मनुष्य की शांति भी उसी पर टिकी हुई है, गौरव भी उसी पर टिका हुआ है,

परलोक भी उसी पर टिका हुआ है और समाज के लिए उपयोगिता-अनुपयोगिता भी उसी पर टिकी हुई है। इसीलिए हमको सारा ध्यान इस बात पर देना चाहिए कि आदमी का विचार करने का तरीका, सोचने का तरीका बदल जाए। पिछले दिनों जब हमारे देश के नागरिकों के विचारणा का स्तर बहुत ऊँचा था और शिक्षा के माध्यम से और अन्य वातावरण के माध्यम से या धर्म-अध्यात्म के माध्यम से यह प्रयत्न किया था कि आदमी ऊँचे किस्म का सोचने वाला हो और उसके विचार, उसकी इच्छाएँ और उसकी आकांक्षाएँ और उसकी महत्त्वाकांक्षाएँ नीच श्रेणी के जानवरों जैसी न होकर के महापुरुषों जैसी हों। जब यह प्रयास किया जाता था तो अपना देश कितना ऊँचा था। देवता गिने जाते थे यहाँ के नागरिक। यह राष्ट्र सारी दुनिया की आँखों में स्वर्ग जैसा दिखाई पड़ता था। इस महानता और विशेषता को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए धर्म और अध्यात्म का सारा ढाँचा खड़ा किया गया। धर्म और अध्यात्म

खड़ा किया गया है, मूल नहीं है धर्म और अध्यात्म। मूल तो है, मनुष्य की विचार करने की ऊँचाई और उस ऊँचाई को कायम करने के लिए एक बाड़ बनाई गई है, एक ढाँचा खड़ा किया गया है, एक ढाँचा ढाला गया है; ताकि आदमियों के विचार करने की ऊँचाई बनी रहे। धर्म यही है और अध्यात्म यही है और ईश्वर भी यही है।

धर्म-अध्यात्म का ढाँचा : उद्देश्य

ईश्वर के बारे में जितना ज्यादा लिखा गया है और कहा गया है, ये बारीकी से देखा और ये सोचा कि पूजा-पाठ से लेकर के ईश्वर की चर्चा-लीला कहने से सबका क्या प्रयोजन है? यह एक ही प्रयोजन दिखाई पड़ा कि ईश्वर एक परब्रह्म, अपार और नियामक शक्ति है, आदमी के काम को देखती रहती है। आदमी के चाल-चलन और आदमी के विचार के अनुसार से फल देती रहती है। उसे आदमी की प्रशंसा से क्या मतलब? निंदा से क्या मतलब? पूजा से क्या मतलब है? गाली देने से क्या मतलब

है ? लेकिन जब मैंने ये विचार किया कि पूजा-पाठ से लेकर धर्म और अध्यात्म तक का सारा ढाँचा किस वजह से खड़ा किया गया है और इसका मतलब क्या है ? इसका मतलब सिर्फ एक है और कुछ नहीं है, वह यह है कि इन सारे के सारे कलेवरों के बंधनों में जकड़ा हुआ मनुष्य ऊँचे किस्म के विचार करना सीखे । आदर्शवादी विचारों को अपने मन और अंतरंग में स्थापित किए रह सके । ये मनुष्य की महानतम सेवा है और मनुष्य के जीवन की महानतम सफलता है । उसके मन में श्रेष्ठ किस्म के विचार रहते हों और इस तरह के विचार रहते हों, जो उसके व्यक्तिगत जीवन को पवित्र बना दें और जो उसके व्यक्तिगत जीवन के दोष और दुर्गुणों का समाधान कर दें और इस तरह के विचार जो मनुष्य को उदार बनाते हैं और जो मनुष्य को स्वार्थपरता और संकीर्णता के जाल और जंजाल से निकालते हैं । वो विचार जो मनुष्य की परिधि को-सीमा को अपने शरीर से आगे बढ़ाते हैं अपने कुटुंब से आगे बढ़ाते हैं, अपने बच्चों

से आगे बढ़ाते हैं और इतना विशाल बनाते हैं कि वह सारे समाज का अंग हो जाता है और सारे समाज की पीड़ा को अपनी पीड़ा समझता है और सारे समाज की सुविधाओं को अपनी सुविधा समझता है और सारे समाज के कष्टों को अपना कष्ट समझता है और समाज की सेवा को अपनी सेवा समझता है। जब इतना ऊँचा स्तर मनुष्य का हो जाए, तो समझना चाहिए कि इसके पास धर्म की मान्यता आ गयी, अध्यात्म की मान्यता आ गई और ईश्वर की भक्ति आ गई।

हर काम ऊँचे दृष्टिकोण से

ये सारे के सारे जो कुछ भी हमारा दार्शनिक ढाँचा खड़ा हुआ है, इसी आधार पर खड़ा हुआ है और ये स्तर यदि मनुष्यों का बना रहा, तो जो कुछ भी आदमी काम करेगा, उसी में शान उत्पन्न हो जाएगी, उसी में सुख और सुविधा उत्पन्न हो जाएगी। ईमानदार आदमी अगर तिजारत करेगा, तो उससे सारी जनता को बहुत लाभ होगा और उससे चीजें

खरीदने वालों को बहुत संतोष होगा। एक-दूसरे के प्रति प्रेम और विश्वास के भाव बढ़ेंगे। व्यापार हो तो क्या? अध्यापन हो तो क्या? मजदूरी हो तो क्या? कोई भी काम क्यों न हो, अगर मनुष्य ऊँचे दृष्टिकोण से करे, अच्छे दृष्टिकोण से करे, तो वह छोटा-सा काम समाज के लिए बहुत उपयोगी हो सकता है और व्यक्ति की शान और गौरव को ऊँचा उठा सकता है। हर आदमी यह कोशिश करेगा कि मेरा काम अच्छे किस्म का हो और मेरी इज्जत उस अच्छे काम के साथ में जुड़ी हुई हो। पैसा कम देता हो कि ज्यादा, लोग इस बात की सराहना करें कि किसी आदमी ने इसे बड़ी दिलचस्पी और बड़ी मेहनत के साथ किया है फिर उसकी इज्जत और आबरू लोगों की आँखों में बढ़े और अपनी आँख में भी अपने आपको भी यह मालूम पड़े कि हम ईमानदार, शरीफ, नेक और कर्तव्यपरायण और वचन के पाबंद हैं। आदमी की ऊँचाई इसी बात पर टिकी है।

साधनों का स्तर गिरा

इस ऊँचाई को कायम रखने के लिए, विवेकशीलता को कायम रखने के लिए इस तरह के विचारों की आवश्यकता है जो मनुष्य को ऐसा ऊँचा उठाएँ। दुर्भाग्य है कि हमारे पास विचार करने के जितने भी क्रम और साधन थे, वो सारे के सारे अस्त-व्यस्त और भ्रष्ट हो गए। साहित्य को देखा है न। साहित्य की दुकान पर जब हम जाते हैं और प्रेसों में जब हम कूड़ा-कबाड़ा छपते हुए देखते हैं, पत्र-पत्रिकाएँ जब हमारी आँखों के सामने आती हैं, जी में आता है कि उनको जला दिया जाए या अपना सिर फोड़ दिया जाए या अपनी आँखें फोड़ ली जाएँ। ये कोई साहित्य है क्या? जो आदमी को अधःपतन की ओर ले जाता है, गिरावट की ओर ले जाता है। जो कुछ भी हम देखते हैं ज्ञानवर्द्धन का सामान, कला को देखते हैं, दूसरी चीजों को देखते हैं। यहाँ तक देखते हैं कि धर्म और अध्यात्म के नाम पर जो नसीहतें दी जाती थीं, जो शिक्षण दिए जाते थे

वो भी इतने गंदे और फूहड़ किस्म के हैं कि जी में आता है कि उनके धर्म और पूजा-पाठ के, कथा-पुराणों की किताबों को इकट्ठा करके उनको दियासलाई लगा दिया जाए और उनको जल कर दिया जाए। भागवत से लेकर के न जाने कौन-कौन सी विरोधी किताबें हैं, जिनमें न जाने क्या कूड़ा-कबाड़ा, भरकर रख दिया है जो आदमी को ऊँचे उठाने की अपेक्षा और नीचे गिराती हैं और आदमी के चरित्र को और भी बदनाम करती हैं और आदमी को ऐसी दिशा और प्रेरणा देती हैं और घटिया किस्म की बनाती हैं। सारी की सारी दिशाओं में हम यह देखते हैं कि मनुष्य की अकल और मनुष्य की समझ को ऊँचाई से नीचे गिराने के लिए न जाने क्या से क्या चारों ओर से कबाड़ा इकट्ठा किया गया है। आदमी घटिया ही होता हुआ चला जाता है। आदमी को ऊँचा बनाने के लिए उन साधनों की जरूरत है जो कि मनुष्य के विचारों में धनात्मक परिवर्तन लाते हों, ऊँचाई लाते हों, श्रेष्ठता लाते हों, शान लाते हों,

द्विजत्व की भावना लाते हों। इस तरह का सारे का सारा कलेवर और ढाँचा खड़ा किया जाना चाहिए जिससे कि आदमी के विचार करने की शैली कुछ ऊँची उठे, श्रेष्ठ बने। आदमी श्रेष्ठ नागरिक बनेगा, तो अपनी राजनीति ठीक हो जाएगी और श्रेष्ठ नागरिक बनेगा, तो व्यापार सही हो जाएगा। श्रेष्ठ नागरिक बनेगा, तो आदमी का स्वास्थ्य ठीक हो जाएगा। अगर श्रेष्ठ नागरिक बनेगा, तो अपने कुटुंब और परिवार में बड़े प्यार और इज्जत के साथ, शान के साथ रहेगा। आदमी श्रेष्ठ नागरिक बनेगा, तो उसके बालक न जाने कैसे अच्छे हो जाएँगे। श्रेष्ठ नागरिक होगा, तो उसके पैसे की आमदनी जो कुछ भी है, उसका बेहतरीन इस्तेमाल होगा। व्यक्ति अपने आपमें स्वर्ग में रहता हुआ अनुभव करेगा और सारे समाज में शांति आएगी, अगर व्यक्ति का स्तर ऊँचा हो जाए तब !

विचार शैली बदले

इसलिए हमारे लिए सबसे बड़ा काम मनुष्य जाति की सेवा का यह है कि आदमी की विचार करने

की शैली को उत्कृष्ट बनाने के लिए बेहतरीन किस्म के योजनाबद्ध काम किए जाएँ।

उसका पहला कदम यह है कि मनुष्य की सोचने की शैली में आमूलचूल परिवर्तन कर दिया जाए। पिछले हजारों वर्ष ऐसे भयंकर समय में गए हैं, जिसमें सामंतवाद से लेकर के पंडावाद तक छाया रहा। हमारे धर्म के ऊपर पंडावाद छाया रहा। जिसमें यह कोशिश की गई कि आदमी को बौद्धिक दृष्टि से गुलाम बना दिया जाए, ताकि उसके चंगुल में फँसे हुए लोग जिसको चेले कहते हैं, भगत कहते हैं, धर्म प्रेमी कहते हैं, उनकी बुरी तरीके से हजामत बनाई जा सके और उल्लू बनाया जा सके। बौद्धिक क्षेत्र में एक ओर हमारा पंडावाद हावी रहा, जिसने कि मनुष्य की कोई सेवा नहीं की। धर्म के नाम पर, अध्यात्म के नाम पर, तीर्थ यात्रा के नाम पर, पूजा-पाठ के नाम पर आदमी को राई भर भी नहीं उठाया गया बल्कि सही बात यह है कि और भी अनैतिक बना दिया गया और आदमी को मूढ़तावादी और

अंधविश्वासी बना दिया गया। पंडावाद के द्वारा समाज की बहुत हानि हुई। जिस प्रकार से पंडावाद के द्वारा विशाल हानि हुई है, उसी प्रकार से राजसत्ता जिन लोगों के हाथ में रही, उनको हम सामंत कहते हैं, उनको हम राजा कहते हैं और उनको हम डाकू कहते हैं। उन लोगों ने सिर्फ अपने महल, अपनी अय्याशी और विलासिता के लिए समाज का शोषण किया और बराबर ये कोशिश की, कि कहीं ऐसा न हो जाए कि विचारशीलता फैल जाए और लोगों में अनीति के विरुद्ध बगावत के भाव पैदा हो जाएँ, न्याय की भावना पैदा हो जाए। फिर हमारा क्यों करेंगे ये लोग समर्थन? यही बात पंडावाद ने भी कोशिश की, कि लोग समझदार न होने पाएँ। समझदार हो जाएँगे तो हमारे शिकार हमारे हाथ से निकल जाएँगे और यही बात सामंतवाद ने कोशिश की कि आदमी को घटिया किस्म से विचार करना सिखाया जाए अन्यथा विचारशील और समझदार और चरित्रवान लोग हो जाएँगे, तो उन पर हावी होना और मनमानी

करना हमारे लिए मुमकिन नहीं रहेगा। दोनों ही तरीके से बराबर यह कोशिश की गई कि आदमी के विचार करने की शैली गिरा दी जाए और घटा दी जाए। यही काम था कि हम हजार वर्षों तक गुलाम होकर रहे। वजह क्या थी? पंद्रह सौ लोग, पंद्रह सौ मुसलमान हिंदुस्तान के ऊपर आए और एक हजार वर्ष तक इस बुरी तरीके से हुकूमत हमारे ऊपर करते रहे, ऐसे नृशंस अत्याचार करते रहे जैसे कि दुनिया की तवारीख में कभी भी कहीं दिखाई नहीं पड़ते, लेकिन हम बुझदिलों के तरीके से, कायरों के तरीके से, मरे हुए लोगों के तरीके से इस तरीके से उनके अत्याचारों को सहन करते रहे कि हम जरा भी उनके विरुद्ध सिर ऊँचा नहीं कर सके, कुछ भी कर नहीं सके। ज्यादा से ज्यादा जी में आया तो बस भक्ति की बात कह दी, सूरदास जी का गीत गा दिया, मीरा जी का गीत गा दिया और राम जी का गीत गा दिया। बस खत्म हो गया। खेल खत्म और कुछ भी नहीं कर सके। क्यों? विचार करने का स्तर आदमी का

गिरा हुआ था, घटिया। गिरा हुआ और घटिया विचार करने का स्तर है, जिसने हमें मुद्दतों तक गुलाम रखा और हम अभी भी बौद्धिक गुलामी में बुरी तरीके से जकड़े हुए हैं। राजनीतिक गुलामी दूर हो गई तो क्या? बौद्धिक गुलामी जहाँ की तहाँ है। अकल की दृष्टि से हम बेहद बुरी तरीके से गुलाम हैं।

अभी भी गुलाम हैं हम

सामाजिक कुरीतियों को देखिए न, कोई तुक है इसमें? कोई बात है? कोई चीज है इसमें? हमारी कुलदेवी है और कुलदेवी पर हमारे बच्चे का मुंडन होगा। कुलदेवी कहाँ रहती है तुम्हारी? २००० मील दूर रहती है। वहाँ क्या करोगे? बच्चे का मुंडन कराने ले जाएँगे। फिर क्या हो जाएगा? देवी को बालों को चढ़ा देंगे। क्या करेगी देवी? बालों को खाएगी। रोटी नहीं खाती? नहीं, बाल खाती है। बाल नहीं खिलाया तो? ये देवी बीमार कर देगी और बच्चे को मार डालेगी। देवी है कि चुड़ैल है। इस तरह की चुड़ैलों को देवियाँ बना दिया गया,

कुलदेवी बना दिया गया और पागल आदमी कलकत्ता (कोलकाता) से रवाना होता है और कुलदेवी उसकी जैसलमेर में रहती है, दो हजार रुपया फूँककर के आ जाता है और बच्चे का मुंडन करा के आता है और समझता है कि मैंने देवी के ऊपर एहसान कर दिया या देवी ने उसके ऊपर एहसान कर दिया। पागल कहीं का!

इस तरीके के पागलों से सारा समाज भरा हुआ पड़ा है। बौद्धिक दृष्टि से गुलाम और हमारी सामाजिक कुरीतियाँ कैसी बेहूदा। ये कुरीतियाँ हमारा सारा का सारा पैसा खा जाती हैं, अकल खा जाती हैं। जाने क्या से क्या खा जाती हैं? बस इधर से उधर मारे-मारे लोग डोलते हैं यहाँ से वहाँ। उनमें अकल नहीं है न विवेक है। हम देखते हैं कि बौद्धिक दृष्टि से किस तरीके से गुलाम हमारे यहाँ हैं। जन्मपत्रियों की बात को ले लीजिए न। जन्मपत्री का जंजाल ऐसा खड़ा हो गया है कि लाखों आदमी उसी से उल्लू बने फिरते हैं। मंगल आ गया, राहू

आ गया, चंद्रमा आ गया, शुक्र आ गया। चंद्रमा भी इन्हीं के ऊपर आ गया है और यहीं राजा साहब बैठे हुए हैं। चंद्रमा भी इन्हीं के पीछे-पीछे फिरेगा। चंद्रमा के पास काम ही नहीं है। इन्हीं को मारेंगे, इन्हीं की पूजा करेंगे, इन्हीं पर लक्ष्मी बरसाएँगे, इन्हीं को हानि पहुँचाएँगे। बस यही रह गए हैं, नवाब के तरीके से। चंद्रमा इन्हीं के पीछे पड़ेगा। बेवकूफ कहीं के। इस तरीके से बेअकली और बेवकूफी का कोई अंत है क्या? कुछ अंत नहीं है।
नैतिक मूल्य गिरे हैं

सामाजिक कुरीतियों को कहाँ तक वहन किया जाए और सामाजिक कुरीतियों को वहन करने के चक्कर में नैतिकता के मूल्य के बारे में आदमी इस कदर पिछड़ता चला गया है कि आदमी के जी में न जाने कैसे यह विश्वास जम गया है कि हम अगर बेईमान होकर के जिएँगे तो और मालदार हो जाएँगे। कामचोरी करेंगे तो हमारी तरक्की हो जाएगी। ये करेंगे, तो हमारा ये हो जाएगा। भ्रष्ट आदमी का मन

ऐसा घटिया हो गया है कि मेरे मन में ऐसा आता है कि सारी की सारी विचार करने की शैली को मैं बदल दूँ। एक और भी जमाना ऐसा आया था कि जिस जमाने में हर आदमी के विचार करने का ढंग बहुत ही घटिया और बहुत ही नीच हो गया था। फिर क्या हुआ? भगवान ने अवतार लिया था और वह परशुराम जी का अवतार था। परशुराम जी के अवतार ने हाथ में एक कुल्हाड़ा लिया और उस कुल्हाड़े से आदमियों के सिर काट डाले। उनसे सारी दुनिया के कई बार सिर काटे डाले।

सिर काटना अर्थात् दुर्बुद्धि का उपचार

मित्रो! कई बार मैं विचार करता था कि सिर काट डालने का क्या मतलब है? आदमी का सिर काट डालने से क्या आदमी बदल जाएगा? मरने के बाद भूत हो जाएगा, पलीत हो जाएगा और फिर तंग करेगा, मक्कारी करेगा। इस तरीके से मार डालने से क्या हो सकता है? फिर दिमागों को बदलने की बात मेरी समझ में आई कि आलंकारिक रूप परशुराम

भगवान का अवतार हुआ था। इसी उद्देश्य के लिए हुआ था कि दुर्गुणों को, लोगों की अकल और समझ को हम बदल दें, तो आदमी की निन्यानवे फीसदी समस्या अपने आप हल हो जाएगी। समस्या कुछ है ही नहीं।

मनुष्य की जितनी समस्याएँ हैं, सब उसकी बेअकली की पैदा की हुई समस्याएँ हैं। संतान नहीं होती है, तो बहुत ही अच्छी बात है। इससे बड़ा सौभाग्य और क्या हो सकता है? संतान नहीं है, तो आप अकेले हैं। मियाँ-बीबी दो आदमी रहिए और अपना बचा हुआ पैसा समाज के लिए लगाइए। खुशहाली से रहिए, सैर कीजिए। बच्चे के पालन करने की जिम्मेदारी नहीं है, रोने-चिल्लाने की जिम्मेदारी नहीं है। दवा-दारू की जिम्मेदारी नहीं है। बताइए, इसमें क्या बात है? नहीं साहब! हमारे बच्चा नहीं होता, हम तो दुखी हैं। हमारी मनोकामना पूर्ण हो जाए तो अच्छा है। हमारे बच्चा हो जाए, तो अच्छा है। बेवकूफ कहीं का! इस तरीके से बेअकली

और बेवकूफी हमारे रोम-रोम में इस बुरी तरीके से छा गई है कि मनुष्यों को मैं क्या कहूँ? मैं उसको जानवर ही कह सकता हूँ।

मनुष्य को जरूरत है समझदारी की

आज मनुष्य एक ऐसा जानवर हो गया है, जिसको समझदारी सिखाई जानी चाहिए। इसके लिए दूसरी चीजें, जिनको हम शारीरिक आवश्यकताएँ कहते हैं और जिनको हम आर्थिक आवश्यकताएँ कहते हैं, अगर पहाड़ के बराबर भी जुटा करके रख दी जाएँ तो आदमी का रत्ती भर भी भला नहीं हो सकता। हम देखते हैं कि गरीब आदमी दुखी है, अमीर आदमी उससे भी ज्यादा हजार गुनी परेशानी में, उलझनों में, क्लेशों में पड़े हुए हैं; क्योंकि उनके पास विचार करने की कोई शैली नहीं है। अगर उनके पास कोई विचार रहा होता तो इतना अपार धन उनके पास पड़ा हुआ है, जिसे न जाने किस काम में लगा दिया होता और उस काम के द्वारा समाज में न जाने क्या व्यवस्था उत्पन्न हो गई

होती। न जाने समाज का कैसा कायाकल्प हुआ होता, लेकिन नहीं, वही धन बेटे में, पोते में, जमीन और जेवर-सब में ऐसे ही तबाह होता चला जाता है।

समझदारी का शिक्षण

मित्रो ! आज आदमी के पास कोई लक्ष्य, कोई दिशा नहीं है। हमारे पास विद्या है तो हम इसका क्या करें ? पैसा है तो इसका क्या करें ? समाज के सामने ढेर लगी समस्याओं का हल किस तरीके से करें, कुछ समझ में नहीं आता। ऐसी बेअकली की अवस्था को दूर करने के लिए यह आवश्यकता अनुभव की गई कि लोगों को समझदारी सिखाई जाए। समझदारी केवल ज्योमेट्री, इतिहास, भूगोल को नहीं कहते। समझदारी उसे कहते हैं, जिसके द्वारा सही चिंतन करने के बाद में आदमी व्यक्तिगत जीवन की समस्याओं, समाज की समस्याओं और अपने युग की समस्याओं का समाधान कर सके। ऐसी जानकारी का नाम ज्ञान है। आज सबसे बड़ी आवश्यकता इस बात की समझी गई है कि हजार

वर्ष की गुलामी के बाद आदमी के विचार करने का ढंग भ्रष्ट हो गया है, उसका कण-कण दूषित और विकृत हो गया है। इसको उखाड़ करके फेंक दिया जाए और सोचने के नए तरीके लोगों के दिमागों में स्थापित किए जाएँ। विवेकशीलता के आधार पर क्या बात सोची जानी चाहिए और क्या बात नहीं सोची जानी चाहिए, क्या किया जाना चाहिए और क्या नहीं किया जाना चाहिए, कौन-सी दिशा गलत है और कौन सही है ? इसका शिक्षण किया जाए। यह शिक्षण करना मानव जाति की, समाज की सबसे बड़ी सेवा है।

साथियो ! अपने युगनिर्माण योजना के युग-परिवर्तन के कार्यक्रम में पहला स्थान इसी को दिया गया है। हमने ये कोशिश की है कि इस तरह के विचारों की एक धारा और उसकी पद्धति और संहिता का निर्माण किया जाए, जो मनुष्यों के गलत सोचने के स्थान पर सही सोचने का मार्गदर्शन कर सके। मैंने ढेरों पुस्तकें पढ़ी हैं, लेकिन ऐसा साहित्य कहीं

नहीं है, जो आदमी को और उलझन में डालने के बजाय उसको सही सोचने का तरीका सिखाए। सही सोचने का तरीका सिखाने के लिए युग निर्माण योजना ने ऐसा साहित्य, ऐसी विज्ञप्तियाँ, ऐसे ट्रैक्ट कम-से कम मूल्य पर छापे हैं, जिसको पढ़ने के बाद आदमी को स्वतंत्र चिंतन की दिशा मिले। आदमी को यह प्रकाश मिले कि हमारे सोचने का सही तरीका क्या है, समाज की समस्याओं का वास्तविक स्वरूप क्या है, व्यक्ति की उलझनों का वास्तविक कारण क्या है, उनका समाधान किस तरीके से किया जा सकता है? अगर यही राह मिल जाए तो बीमारियों का निदान हो जाएगा। समाज में फैली हुई विकृतियों का एकमात्र कारण मनुष्य का गलत सोचना है। अगर गलत सोचने की बात को आदमी जान ले और सही सोचना शुरू कर दे, तो मजा आ जाए।

सबसे महत्वपूर्ण प्रयास

मित्रो! मनुष्य जाति के सामने साधन उत्पन्न करने के लिए युग निर्माण योजना ने एक प्रयास आरंभ

किया और वैसी विचारधारा का साहित्य का निर्माण किया। यह इस युग की महती सेवा है कि आदमी को क्रमबद्ध रूप से सामाजिक, नैतिक, बौद्धिक, आर्थिक, पारिवारिक, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय समस्याओं के बारे में स्वतंत्र चिंतन करना कैसे सिखाया जाए? यह प्रयास अन्यत्र नहीं शुरू हुआ था, आज अपनी संस्था के द्वारा शुरू हुआ है। इसके द्वारा कितना साहित्य लिखा गया है, कितने विचारों का एक समूह इकट्ठा किया गया है, इसका मूल्यांकन आज की परिस्थिति में नहीं हो सकता। इसका मूल्यांकन बहुत दिन पीछे होगा, जब लोग समझेंगे कि गलत दिशा में जाने वाले जनसमूह को सही दिशा में लाने के लिए जो मोड़ दिया गया, उस मोड़ को देने का श्रेय किसका है और किसने ऐसा मोड़ दिया? यह मोड़ मानव जाति की महती सेवा है, ऐतिहासिक सेवा है।

युग निर्माण योजना द्वारा अपने ज्ञानयज्ञ के माध्यम से संबंध और संपर्क रखने वालों से यह प्रार्थना की गई है कि लोगों को अपने समय का एक

अंश और अपने धन का एक अंश निकालना चाहिए। उसे इस बात के लिए खर्च करना चाहिए कि लोगों के विचार करने का क्रम किस तरीके से बदला जाए, सुधारा जाए। समयदान, अंशदान की यह आवश्यक शर्त लगाई गई है। प्रयत्न यह किया गया है कि इस संगठन, इस मिशन से प्यार रखने वाला हर सदस्य उसकी सदस्यता शुल्क के रूप में प्रतिदिन एक घंटा समय दिया करे और कम से कम ५० पैसा तो दिया करे। ५० पैसा कोई बड़ी रकम नहीं होती है। एक प्याला चाय इतने पैसे की आती है। गरीब से गरीब और अमीर से अमीर आदमी के लिए कुछ मुश्किल नहीं है, अगर उसके मन में इसकी महत्ता समा जाए तब। अगर महत्ता समाई नहीं, तो एक कानी कौड़ी भी भारी मालूम पड़ती है।

सद्ज्ञान विस्तार हेतु अंशदान

व्यक्ति शराब पीने में, सिनेमा देखने में पचास रुपये खर्च करके आता है। अच्छे काम के लिए कहा जाए तो एक रुपये में ही उसका प्राण निकल जाता है।

आदमी जिस चीज का मूल्य नहीं समझता, उसके लिए जरा भी खरच नहीं कर पाता, लेकिन अगर वह उसका मूल्य समझता हो, तो एक रोटी, आधी रोटी का टुकड़ा भी आसानी से खरच कर सकता है। एक रोटी एक रुपये की आती है। आधी रोटी तो हम कुत्ते को रोज ही फेंक देते हैं। आधी रोटी को फेंक देना कौन-सी मुश्किल की बात है। अगर आदमी की समझ में आ जाए कि ज्ञान नाम की भी दुनिया में कोई चीज होती है। ज्ञान की भी उपयोगिता है। ज्ञान का भी समाज में कोई मूल्य है। अगर ये बातें उसकी समझ में आएँ, तो उसे यह समझाना है कि इस जमाने में ज्ञान कितना आवश्यक है। इससे पहले इसकी इतनी ज्यादा आवश्यकता कभी नहीं हुई।

मित्रो! पुराने जमाने में कम से कम पचास फीसदी विकृतियाँ थीं, जिसमें बीस फीसदी बौद्धिक थीं। आज तो हमारी अकल सौ फीसदी विकृत हो गई है, इसमें कहीं भी कोई पाँव रखने को जगह नहीं मालूम पड़ती। किसी आदमी के दिमाग को

तोड़ा या खोला जाए और उसको खोलकर पढ़ा जाए तो मालूम पड़ेगा कि इसका अस्सी-नब्बे फीसदी दिमाग पागल हो गया है। सारा मस्तिष्क विकृत जैसा है, इसमें सही सोचने की शैली और माद्दा जरा भी नहीं है। इसलिए हमको यह घोर प्रयत्न करना पड़ेगा कि हममें से हर आदमी एक घंटा समय उस साहित्य को दूसरे लोगों को पढ़ाने, सुनाने और समझाने के लिए और स्वयं अपने आपको पढ़ने, सुनने और समझने के लिए लगाए।

समयदान के साथ-साथ ५० पैसे की जो बात कही गई है, वह रकम बहुत छोटी है, उससे भी कुछ काम चल सकता है। बंदूक किसी के पास हो और बारूद न हो, कारतूस न हो, तो क्या काम चलेगा? हमारे घरों में घरेलू पुस्तकालय होना ही चाहिए, यह बहुत बड़ी संपत्ति के बराबर है। किसी घर में जेवर है कि नहीं, गाय-भैंस है कि नहीं, मकान है कि नहीं, तसवीर है कि नहीं, यह बहुत पीछे की बात है। सबसे पहले यह देखा जाना चाहिए कि इसको बौद्धिक

खुराक पूरा करने के लिए हमारे घर में चौका है कि नहीं है। जिस घर में चौका न हो, रोटी का इंतजाम न हो, आटा न हो, दाल न हो, वह कैसा घर? उस घर में आदमी जिएँगे कैसे? जिस तरीके से शरीर की भूख होती है, उसी तरीके से मन की भी भूख होती है और आत्मा की भी भूख होती है। मन और आत्मा की भूख को बुझाने के लिए जहाँ रसोड़ा (रसोई) न हो, चौका न हो, तो जानना चाहिए कि यह भूतों का घर है।

योजना छोटी : परिणाम महान

चल-पुस्तकालय, झोला-पुस्तकालय, एक रुपया अपनी घरेलू लाइब्रेरी के लिए निकालना और एक घंटा समय लोक-मंगल के लिए, ज्ञानयज्ञ के लिए, प्रचार-प्रसार करने के लिए-यह आज की हमारी कार्यशैली है। यह है तो जरा सी, छोटी सी योजना; लेकिन हम देखते हैं कि इस प्रयास के द्वारा अगर समाज में नया जीवन लाया जा सका और लोगों के सोचने का तरीका बदला जा सका, लोगों के अंदर प्राण पैदा किया जा सका, लोगों के अंदर उल्लास-

उत्साह पैदा किया जा सका, लोगों को सच्चिंतन की दिशा दी जा सकी, तो निश्चित रूप से मनुष्य जो आज दिखाई पड़ता है, कल नहीं रहेगा और जो समाज आज दिखाई पड़ता है, वह कल नहीं रहेगा। आज जो विकृतियाँ सारे समाज को भ्रष्ट किए हुए हैं, वे कल नहीं रहेंगी। जमाना अवश्य बदल जाएगा। जमाना बदलने के लिए सबसे बड़ी आवश्यकता ज्ञान की है। इन चिनगारियों की मशाल अगर जलाए रखी जा सके, तो हम न केवल भारतवर्ष की, वरन समस्त विश्व की, समस्त प्राणिमात्र की, सारे जड़-चेतन जगत की महती सेवा कर सकते हैं। ज्ञानयज्ञ हमारा विश्वकल्याण का यज्ञ है। उसको केवल भौतिक दृष्टि से हजार गुना, लाख गुना बड़ा माना जाना चाहिए और हर विचारशील को ज्ञानयज्ञ के लिए अपने हिस्से का कर्तव्यपालन करने के लिए कटिबद्ध हो जाना चाहिए।

ॐ शान्ति !



हमारा युग निर्माण सत्संकल्प

यह सत्संकल्प सभी आत्म निर्माण, परिवार निर्माण एवं समाज निर्माण के साधकों को नियमित पढ़ते रहना चाहिए। इस संकल्प के सूत्रों को अपने व्यक्तित्व में ढालने का प्रयत्न करते रहना चाहिए। इन सूत्रों की व्याख्या 'इक्कीसवीं सदी का संविधान' पुस्तक में पढ़ें।

- ✧ हम ईश्वर को सर्वव्यापी, न्यायकारी मानकर उसके अनुशासन को अपने जीवन में उतारेंगे।
- ✧ शरीर को भगवान का मंदिर समझकर आत्मसंयम और नियमितता द्वारा आरोग्य की रक्षा करेंगे।
- ✧ मन को कुविचारों और दुर्भावनाओं से बचाए रखने के लिए स्वाध्याय एवं सत्संग की व्यवस्था रखे रहेंगे।
- ✧ इंद्रिय संयम, अर्थ संयम, समय संयम और विचार संयम का सतत अभ्यास करेंगे।
- ✧ अपने आपको समाज का एक अभिन्न अंग मानेंगे और सबके हित में अपना हित समझेंगे।

- ✧ मर्यादाओं को पालेंगे, वर्जनाओं से बचेंगे, नागरिक कर्तव्यों का पालन करेंगे और समाजनिष्ठ बने रहेंगे।
- ✧ समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी और बहादुरी को जीवन का एक अविच्छिन्न अंग मानेंगे।
- ✧ चारों ओर मधुरता, स्वच्छता, सादगी एवं सज्जनता का वातावरण उत्पन्न करेंगे।
- ✧ अनीति से प्राप्त सफलता की अपेक्षा नीति पर चलतेहुए असफलता को शिरोधार्य करेंगे।
- ✧ मनुष्य के मूल्यांकन की कसौटी उसकी सफलताओं, योग्यताओं एवं विभूतियों को नहीं, उसके सद्विचारों और सत्कर्मों को मानेंगे।
- ✧ दूसरों के साथ वह व्यवहार नहीं करेंगे, जो हमें अपने लिए पसंद नहीं।
- ✧ नर-नारी के प्रति परस्पर पवित्र दृष्टि रखेंगे।
- ✧ संसार में सत्प्रवृत्तियों के पुण्य प्रसार के लिए अपने समय, प्रभाव, ज्ञान, पुरुषार्थ एवं धन का एक अंश नियमित रूप से लगाते रहेंगे।

- ✧ परंपराओं की तुलना में विवेक को महत्त्व देंगे।
- ✧ सज्जनों को संगठित करने, अनीति से लोहा लेने और नवसृजन की गतिविधियों में पूरी रुचि लेंगे।
- ✧ राष्ट्रीय एकता एवं समता के प्रति निष्ठावान रहेंगे। जाति, लिंग, भाषा, प्रांत, संप्रदाय आदि के कारण परस्पर कोई भेदभाव न बरतेंगे।
- ✧ मनुष्य अपने भाग्य का निर्माता आप है—इस विश्वास के आधार पर हमारी मान्यता है कि हम उत्कृष्ट बनेंगे और दूसरों को श्रेष्ठ बनाएँगे, तो युग अवश्य बदलेगा।
- ✧ 'हम बदलेंगे-युग बदलेगा', 'हम सुधरेंगे-युग सुधरेगा' इस तथ्य पर हमारा परिपूर्ण विश्वास है।

